

22

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥  
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥  
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥  
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ५ ॥  
 श्रीशिवाय नमः ॥ ६ ॥  
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ७ ॥  
 श्रीमहेश्वराय नमः ॥ ८ ॥  
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ९ ॥  
 श्रीहरये नमः ॥ १० ॥  
 श्रीरामाय नमः ॥ ११ ॥  
 श्रीलक्ष्मणे नमः ॥ १२ ॥  
 श्रीबालमनोहारे नमः ॥ १३ ॥  
 श्रीसुग्रीवे नमः ॥ १४ ॥  
 श्रीजयद्रथे नमः ॥ १५ ॥  
 श्रीअर्जुनाय नमः ॥ १६ ॥  
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ १७ ॥  
 श्रीभगवते नमः ॥ १८ ॥  
 श्रीवासुदेवाय नमः ॥ १९ ॥  
 श्रीनारायणाय नमः ॥ २० ॥  
 श्रीहरये नमः ॥ २१ ॥  
 श्रीरामाय नमः ॥ २२ ॥  
 श्रीलक्ष्मणे नमः ॥ २३ ॥  
 श्रीबालमनोहारे नमः ॥ २४ ॥  
 श्रीसुग्रीवे नमः ॥ २५ ॥  
 श्रीजयद्रथे नमः ॥ २६ ॥  
 श्रीअर्जुनाय नमः ॥ २७ ॥  
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २८ ॥  
 श्रीभगवते नमः ॥ २९ ॥  
 श्रीवासुदेवाय नमः ॥ ३० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

111111

[illegible]

II  
255

सुखरत्न राज्यात्म्य सुरत धी महाविहार



१ॐ नमो भगवते ॥ ॥ दानं रोगमयमिच्छस्यवा आर्थमिच्छकं लिखितं स्वल्पकृतं ॥ अ  
थ कृत्वा कृतं कृत्वा कृत्वा यं अस्मिन् कृत्वा यं लिखितं ॥ ॥ दानं रोगमयमस्मिन् नाचमहिमीठी  
नंच समार्जनं कान्तिः कृत्वा यं लिखितं कृतं वीर्यं कृतं लिखितं ॥ ध्यानं कृतं धर्मक  
त्रिकुत्तं यं प्रज्ञा स लिखा कृत्वा ४ गुणा ४ यानमिमा ४ वृत्तव ॥ ॥ ध्यानं कृतं प्रज्ञा कृतं आ  
दिकर्मिकं मृदु सध्यादि मातृ सत्वानां किंदानं ॥ ॥ ध्यानं कृतं प्रज्ञा कृतं आदिकर्मिकं ३  
मृदु ४ मध्या ५ अधिमात्र ६ धर्मसत्त्वपिनिगदानवियानं कृतं प्रज्ञा कृतं नधकधाल ॥ यस्या  
प्रमितायून रत्नं ० यस्या प्रमितायून यस्यास्यं ॥ विना वृत्तं सिद्धिं वृत्तं वृत्तं



अधिमा

विनां वृद्धि सिद्धि प्राप्ति मङ्गल अधिमांश सत्त्वा नां किं दानं अधिमांश आदिनं सत्त्व पिनि न दू  
दानं उक्तं चरुगवना यस्मिन् यज्ञे ॥ एक यज्ञ दानया दू लधक ० रुगवानं आहूय  
कल नमस्तु जाया नमस्तु जाय रुयू नरु यो न कयस्या रुयू नरु मा नरु मा रुयू नमस्तु लं नम  
स्तु ल रुयू नापि च मास्तु ल यं नमस्तु ल स विष्णु क पिं रुयू ॥ ॥ स नमस्तु जाय ४ नियम रु  
ल सा उरु मस्तु जाय रुयू ॥ स नमस्तु ४ उरु मयस्या रुयू ॥ स नमस्तु ४ उरु मा रुयू ॥ स नमस्तु ल  
यं च ० उरु मस्तु ल स विष्णु पिं रुयू नरु येव मस्तु लं उरु मस्तु लं रुयू ॥ स मा स नमस्तु ॥  
शिव रुमांश व पिं रुयू चिरु स मांश व पिं रुयू ० रु मि व व नारु भू लि रुगवानया आहूय ॥ ॥

स



यूननय्युक्तं हकनं धाल नव दाल स्य न्युव दुरुगवानपिमइ स्वयंममाल ॥ लाकधुव  
कुरुचि न लाकधुसमविद्याक ॥ चिरुभवहि संवडा वदुरुगवानपि चिरुसविद्याक ॥ न  
वदान्यदधिग वदधयापिमिरवावनमइ ॥ चिरुधनमावाच चिरुधनयायग  
चिरुगुडनिगडाधनइमइ ॥ नियमं तावदाववग ॥ ॐ ग्यादिकं ॥ नियम. निष्ठाचाव  
लादिन. धर्म. तथावग असेखइ ॥ नवदधीमान्दवान काष्टपाषाणमृत्मान् वदिव  
कला निष्पुर्ग. सिया लाहया. चाया. धनदवगानमंलानमयाक. भवनं याकसी ॥ चिरु  
दवहवकीति चिरुयावावनं यागमख ॥ कल्पकलावेह उना कल्पनावावनयाहउया



काचनेवन्दनायाम् ॥ पुनरुत्पत्तिपादिर्नरवति. समस्तचिरुहुडनेनिनिनिनि  
हला ॥ ॥ अधिमाशुलरुवस्यकिंदानं अधिमाशुसत्वपिनिसेउरुनसत्वपिनि  
संकुदानयाम् ॥ अथवा. सडचिरुअयादानहय. विडिफचिरुअयाहुदानहयम  
रुव ॥ किंरुगमय. कनाम्वना. कनसहिर्न. किंशील. किंसन्मार्जन. काशानिडकिं  
हुड. कापिपीलिका. कस्मात्अयनयन. किंवीर्य. काक्रिया. किंउयस्मान. किंध्व  
न. कम्म. गल्हर्. कस्येकचिरुकनदी. काप्रह. कस्यसूलखादला. पुनाःपावर  
मिनादयःकह्नि ॥ हुडचिरुअयादानयानमिनाआदिनरुललाक. विडिफचि



रुक्मया दानपात्रमिमांसादि किंरुलं हंरुलमइ ॥ अथचनगापि धनंलिहाकनं पा  
त्रमिमांसाविधिस्मृता स्वगात्रकात्रयापात्रमिमांसा ॥ सत्त्वावलंविनी १ धर्मावलंविनी २  
गूणमात्र ३ सत्त्वावलंविनीयात्रमिमांसा १ धर्मावलंविनीयात्रमिमांसा २ गूणमात्रवलंविनी  
यात्रमिमांसा ३ ॥ यत्रार्थं हकनं ॥ सत्त्वावलंविनी आवकांनां सत्त्वावलंविनीयात्रमिमांसा  
आवकचर्याचिल्लक्ष्य ॥ धर्मावलंविनी प्रश्नकयानां धर्मावलंविनीयात्रमिमांसा  
प्रश्नकयानचर्याचिल्लक्ष्य ॥ निनालंविनी अधिमात्रां निनालंविनीयात्रमिमांसा  
अध्यायनिर्वाणपदोन्नयक अधिमात्रकवल संज्ञानध्यायुं हंमइ ॥ कचिरयाही



महायानचर्याचललथगु ॥ <sup>१४०</sup>उवंयात्रमिगा <sup>१७</sup>धगुर्थयात्रमिगाधयागु ॥ विविधा  
सृगा स्वगाप्रकाशयाइ ॥ <sup>३०</sup>गगधिमागस्यकिंदानमिनि <sup>४०</sup>अधिमागसत्वपिनिगुदा  
नमियानंदूप्रयाजनधक ॥ <sup>५०</sup>उकंवरुवक <sup>६०</sup>हवजगुरुसधयागयाइ ॥ <sup>७०</sup>ठात्रीनदानं  
दत्वा <sup>८०</sup>ठात्रीनदाननियानाडा <sup>९०</sup>यश्च <sup>१००</sup>त्रयासिमालरु <sup>११०</sup>लिपकसचर्याजालमयाय ॥  
॥ <sup>१२०</sup>रागमरागविवाचरसन <sup>१३०</sup>रागमरागविवाचरयास्यं <sup>१४०</sup>रस्मादानंनदीयक <sup>१५०</sup>ध  
नदानयाप्रयागु ॥ <sup>१६०</sup>ॐनिन्पाया <sup>१७०</sup>थुलिन्पायमनाकन ॥ <sup>१८०</sup>महामद्रा <sup>१९०</sup>उका <sup>२००</sup>रागमहा  
मद्रा <sup>२१०</sup>रागसत्त्वार्थस्यद्विनिर्वा <sup>२२०</sup>रागसत्त्वार्थया <sup>२३०</sup>राग <sup>२४०</sup>अगुव <sup>२५०</sup>थुलिनिमिरुने <sup>२६०</sup>ठात्री



प्रदानं न<sup>२</sup> धनीनदानयानानं मद्रासिद्धिनलखन मद्रासिद्धिमशुधक ॥ ॐ नितरुगवता  
क<sup>१</sup>नि<sup>३</sup>ल<sup>३</sup>षा<sup>३</sup>रु<sup>३</sup>थ<sup>३</sup>लिरुगवानया आरुवि<sup>३</sup>धाषनंरुल ॥ निनालं वनी आ<sup>३</sup> पावमिता<sup>३</sup> निना  
लम्बनी पावमिताया प<sup>३</sup>क<sup>३</sup>ष<sup>३</sup>रु<sup>३</sup>दानं प<sup>३</sup>क<sup>३</sup>स<sup>३</sup>ष<sup>३</sup>घानमिता आदिनं संरुदीनीं संरुदिदा  
नधयागु<sup>३</sup>किंदानमिति<sup>३</sup>रुधक<sup>३</sup>धल ॥ दा<sup>३</sup>श्रुवखलुन<sup>३</sup> ॐ म<sup>३</sup>स<sup>३</sup>पदाने दा<sup>३</sup>श्रुवखलुन<sup>३</sup>ध  
यागुप्रथागनी श्रुवखलुनीनागदिमितिदानं नागद्वयमाह आदिनी व<sup>३</sup>रु<sup>३</sup>ध<sup>३</sup>न<sup>३</sup>घ्रा  
न<sup>३</sup>जिह्वा<sup>३</sup>काय<sup>३</sup>मन<sup>३</sup> ॥ नृप<sup>३</sup>ठा<sup>३</sup>रु<sup>३</sup>गन्ध<sup>३</sup>नस<sup>३</sup>स्य<sup>३</sup>रु<sup>३</sup>त्रिहान ॥ अर्थमरुकरुन<sup>३</sup>धनंलिम  
रुकरुनदान ॥ अर्थदीयनवाचा<sup>३</sup>लिका<sup>३</sup>धनंलिव<sup>३</sup>लिप्ररुतिनं पथ<sup>३</sup>ठानिकाया



पैर्धंकापूनाजीयूरुहयकं वाधिचिरुदानं वाधिचिरुदानवियगुगुगदानमिति  
थगुलीदानधाय॥ रगमयमि रगमयआदिनं रगधयागु पंचद्विधादयः चक्रा  
दिनं पंचरुद्रिय रगमयमीतिमितिहं रगधयागु मिखाआदिनं पंचरुद्रियइगु  
मीलमाहिंसानां रुद्रियानां इषमिन्त्यर्थः हिंसायायमइ रुद्रिययागइखनया  
आहिंसनंयनस्यनसमताहनं यनस्यनसमताहनधायनिर्मास रुद्रियनस्य  
दानवियगु अथ रगमयवधमिनाजीमिनातिथनलि अवधमिनातिइगुमा मइ  
गुमजिआ॥ ननकाययनिधमयमीत्यर्थः उगुदानधायनिधमयास्पंदियमाल ॥



अं वनाचसहि नैलखसहीनगममयतस्यं ४१ नीनीं धावाडवमहासूखचकस्यं महा  
सूखचकसविद्याकम-वन्दमायाअमृतनधावासहीनशयाडा ॥ ननाम्वनासहीन  
युग्मं उगुलखसहीनगममय-धनिना नयाडा सहमर्वखनकीरुनै निगुलिने  
दृग्यास्यं वलुं ल्यासह ४१ नीनीं नयनसमिथीरुनै वलुं लिडा वन्दमाडा मि  
थिन-मिलयशुडागु-महासूखचकधाय ॥ उरुं वरुं वरुं वरुं नलुमधयानयाड  
नाशोदहनिचलुं ली नातिसेदाहहयकउल्लिहडागु-वलुं ली ० दहल्यथ  
नथगगान् दाहहयक ४१ नीनसवानसूयथ वरुं दहनिं लाचनोदीनी लाच



नादियंचगानापिनिगदाहयान<sup>५</sup>दर<sup>५</sup>भन<sup>५</sup>थव<sup>५</sup>न<sup>५</sup>भा<sup>५</sup>भी<sup>५</sup>ध<sup>५</sup>न<sup>५</sup>दा<sup>५</sup>ह<sup>५</sup>र<sup>५</sup>उ<sup>५</sup>गु<sup>५</sup>ली<sup>५</sup>स  
वन्दमायाअमृ<sup>५</sup>न<sup>५</sup>गु<sup>५</sup>लं<sup>५</sup>खनं<sup>५</sup>भी<sup>५</sup>न<sup>५</sup>ल<sup>५</sup>ह<sup>५</sup>ल<sup>५</sup>॥ ॐ<sup>५</sup>स्व<sup>५</sup>ना<sup>५</sup>च<sup>५</sup>स<sup>५</sup>हि<sup>५</sup>नं<sup>५</sup>थ<sup>५</sup>लि<sup>५</sup>अं<sup>५</sup>व<sup>५</sup>स<sup>५</sup>ही<sup>५</sup>  
तम<sup>५</sup>कां<sup>५</sup>त<sup>५</sup>य<sup>५</sup>अ<sup>५</sup>र्थ<sup>५</sup>३॥ ॥ किं<sup>५</sup>त<sup>५</sup>भी<sup>५</sup>ली<sup>५</sup>भी<sup>५</sup>ल<sup>५</sup>ध<sup>५</sup>या<sup>५</sup>गु<sup>५</sup>॥ भी<sup>५</sup>ल<sup>५</sup>स<sup>५</sup>मा<sup>५</sup>र<sup>५</sup>भे<sup>५</sup>स  
मा<sup>५</sup>धि<sup>५</sup>स<sup>५</sup>मि<sup>५</sup>धि<sup>५</sup>उ<sup>५</sup>क<sup>५</sup>चि<sup>५</sup>रु<sup>५</sup>क<sup>५</sup>न<sup>५</sup>ध<sup>५</sup>मि<sup>५</sup>र्य<sup>५</sup>थ<sup>५</sup>३ भी<sup>५</sup>ल<sup>५</sup>ध<sup>५</sup>या<sup>५</sup>गु<sup>५</sup>स्व<sup>५</sup>ता<sup>५</sup>वे<sup>५</sup>नं<sup>५</sup>उ<sup>५</sup>क<sup>५</sup>चि<sup>५</sup>रु<sup>५</sup>या<sup>५</sup>ना  
उ<sup>५</sup>। स<sup>५</sup>मा<sup>५</sup>धि<sup>५</sup>या<sup>५</sup>य<sup>५</sup>गु<sup>५</sup>भी<sup>५</sup>ल<sup>५</sup>ध<sup>५</sup>थ<sup>५</sup>॥ स<sup>५</sup>मा<sup>५</sup>र्जन<sup>५</sup>मि<sup>५</sup>नि<sup>५</sup>॥ स<sup>५</sup>मा<sup>५</sup>व<sup>५</sup>रु<sup>५</sup>नां<sup>५</sup>मा<sup>५</sup>र्जनं<sup>५</sup>उ<sup>५</sup>रु<sup>५</sup>नं<sup>५</sup>  
व<sup>५</sup>पू<sup>५</sup>ना<sup>५</sup>उ<sup>५</sup>। स<sup>५</sup>त्वं<sup>५</sup>ध<sup>५</sup>य<sup>५</sup>रा<sup>५</sup>व<sup>५</sup>गु<sup>५</sup>द्व<sup>५</sup>या<sup>५</sup>य<sup>५</sup>गु<sup>५</sup>॥ मृ<sup>५</sup>ज<sup>५</sup>गु<sup>५</sup>द्व<sup>५</sup>स<sup>५</sup>मा<sup>५</sup>वि<sup>५</sup>द्य<sup>५</sup>मा<sup>५</sup>न<sup>५</sup>स्य<sup>५</sup>० मृ<sup>५</sup>ज<sup>५</sup>व<sup>५</sup>स<sup>५</sup>  
इ<sup>५</sup>। ध<sup>५</sup>रु<sup>५</sup>या<sup>५</sup>प्र<sup>५</sup>या<sup>५</sup>ग<sup>५</sup>या<sup>५</sup>ना<sup>५</sup>उ<sup>५</sup>। रा<sup>५</sup>व<sup>५</sup>नृ<sup>५</sup>प<sup>५</sup>स्य<sup>५</sup>गु<sup>५</sup>दी<sup>५</sup>क<sup>५</sup>न<sup>५</sup>र्ष<sup>५</sup>रा<sup>५</sup>व<sup>५</sup>गु<sup>५</sup>द्व<sup>५</sup>या<sup>५</sup>य<sup>५</sup>गु<sup>५</sup>अ<sup>५</sup>र्थ<sup>५</sup>प<sup>५</sup>नि



ह्यागं० अर्थः ह्यागयास्यं शुद्धिर्विषयः शुद्धयायगु अर्थः॥ ॥ काकिः काकि  
धयागु क्रमसहन क्रमसहन धयाययागनी सहसंयाग सहयायगु शुभ  
ताकनूत नया शुभगाकनूत अनकनास सि काकिः एकचिरुयास्यं क्रमायाय  
गु धनकाकिधाय॥ ॥ इदमिति विकिर्धग मधु इदं मधु विकिर्धग मधु  
कोदं मधु धायकस्ति मधु पय्यनसंविदं मधु धाययय्यनस इदं वाधिविरुं व मधु  
धायवाधिविरु इदमनं शुद्ध इदं धायविरु शुद्ध ॐ नित्याया नृ थलिन्यायमना  
नन इदं वाधिविरु मिति इदं धायवाधिविरु मा अर्थ थलिरुल॥ ॥



पिपीलिकायनयनं सपानिआदिनं कीलयमंगव्यानाडा घाटकमिष्यथः वगर्नस  
लब्धाकार्थः हकारसुनंलिः चीकगु अर्थः ॥ पिपीलिकानाडीललनानया० सपानिआ  
दिनं दक्याडात्रीन ललनानाडियाह अयनयनं व्यानाडालिचीक ॥ इदं पिपीलि  
कायनयनं चिकिधीपिंसपानिआदिं कीपनंगसकल्पं वाधिविरुमास्वादनमिष्य  
थः वाधिविरुस्वादकायगु अर्थः ॥ वाधिडाद्वंति वाधिडाद्वधयागु अनूरुना  
यासम्यक् वाधि अनूरुनायासम्यक् वाधि नदगंतविरुस्वावक हाननं उ  
त्पलिरुडागु विरुयास्वाव ललनाप्रहास्व नपंचललनानाडिप्रहास्व नप ॥



वाधिविरु मूयायकं वाधिविरु उयायस्व नपा नस्मापनयनं वापि० इदं पिपी  
लियनयनमिच्छार्थः थूलिसमस्तं सयानि ज्ञादिनैष्याना उल्लिखियका उद्यायगु  
मूर्धः॥ ॥ वीर्यमिति वीर्यधया गुपनाक्रमध्वानदियस्य प्रवर्धनं ध्वानयास्य  
ल्लिखियया नः बलवधययायगु उरुजकनर्धं नजस्वीरुयगु असरु रुस्यापनि  
ज्ञागः वानं वानध्वानमना नगु अथवा सनविन विकामो थनं लिधूनवीन वि  
काको ध्वानुयाप्रयागनं विक्रमामं विरहापनं विक्रान्तिनिष्पर्थः बलवधयया  
यगु मूर्धः॥ वीर्यध्यावकयानस्य वीर्यधया गुधावकयानयाः विक्रमर्धं विरहा



षनीयास्य. वीर्यमिति धूलिवीर्यया अर्थः॥

॥ क्रियाह उधर्माथ मूलं

आदिनं आलक्यास्य मानमिति क्रिया कर्मश्चायायगु क्रिया धय ॥ ॥ उल्ला

पनमिति उल्ला न धयागु उल्ला पन समा क न ध. आन क्याना उ. वना वन उर्थ  
न्यं क सादन निव क न कालं ल स न्यास्य उ न गु मार्ग स्या सा न मार्ग स्या स याय ॥

॥ ध्यानमिति ध्यान धयागु ॥ ध्यान समुद्रो विनाया ध्यान समुद्रो वि  
ना ध्यान या धा गु प्रयाग यास्य न स्या धर्म मुद्राया उगु धर्म मुद्रा क या उ न स्ये क  
ल कृदा उगु ल कृदा स्वस्य न कृदा न या न कान्दा क्रिया उल्ला न मि न्यर्थः क्रिया



उथययायगुञ्जर्थः॥

॥ ॐ कविरु कनूयया ॐ कविरुयानाडा ॐ कपुययमा  
कायदा. दृष्टपुययाकस्त्रहृषीति मस्यं याकनूयया गवमसियाकनूयया दन सा ॐ कवि  
रु कनूयया ॐ मसयाग ॐ कविरु कनदा धय ॥

॥ प्रज्ञासलखादला प्रज्ञया

नमितायागज. स्वनूपरुस्य ॥ ॐ नलखासुनखा खरायमानलखावानलाक ॥  
विश्वदृष्टाकायदा नखा जादल्यमान. लखाप्रमान. यवसा माथ. सारुगव  
नीव अलीनारिम धुल्लिमा. ॐ म. वलुल्लिरुगवनी प्रज्ञया नमिता. नारिम  
धुल्लविश्वक मारुगवनी महामुद्रापनिकल्पिता. ॐ मरुगवनी प्रज्ञया न



मिताया. महामूद्रायाम्. कल्पनायाय ॥

॥ ७॥ पात्रमिता ४ स्वरगावा ४ धूलि

समस्तं प्रह्लापात्रमितायास्वरगावयास्यं प्रह्लापात्रमितार्थं ४ प्रह्लापात्रमिता  
या अर्थः ४ प्रतिपरुषा ४ वृजयथाय ॥

॥ गथावादि कर्मिकानां वृद्धानीस

त्वानी धूगुर्थं आदिकर्मयाना उवापिं वृद्धपिं. सत्वपिनिन गमयमिति स

गमं गुक्कयदा र्थयान्. सगमधाय ॥ अधिमात्रसत्वानां अधिमात्रसत्वपिनिन.

प्रह्लापात्रमितापूनरक्षन. प्रह्लापात्रमितापूनयमयास्यं सर्वा ४ पात्रमिता ४ पूनि

तारुवति सकलपात्रमितापूनयथाय शुद्धक ०० ति न्यायात् धूलिन्यायमतात्



नसध्यानयाइ ॥ तडकं प्रज्ञायानमिनायां प्रज्ञायानमिना ॥ ४॥ सुसध्यानया  
इ ॥ ७॥ उवंभवसुतं थुगुर्थं हसुतं निमहायानं महायानमिति महायानध्या  
गुनिचंजननिनाकात्रा नगुयथकायस्यानं नापलत्यनं गथ्वा नीनया आदि  
अकसियकमजित्त मध्वं नापलत्यनं आर्थं मध्वं तागं सीकमयूः नादिमपलत्य  
नं आदितागं सीकमयूः सर्वतावामाकाठा मीलितारुवति सकलसमस्तता  
वनं आकाठा सुलीनरुल नाकाठा दृश्यमपलत्यनं आकाठा दृदनयार्थमजि  
उानरुयमपलत्यनं रुदयार्थमयूः ७॥ उवंहिसुतं थुगुर्थं हसुतं निमहायान



मिति महायानया अर्थः निवृत्तनायायमर्थः ॥ महायानश्च प्रज्ञापानमिमास्वनृपा  
महायानध्यागुप्रज्ञापानमिमास्वनृपागु. प्रज्ञापानमिमाहिप्रज्ञापानमियाध्व  
नध्यागु श्रुतिचिन्तनावावनायाः ४ नानं. चित्तयावावस्वयानं पानमिमाग  
नकि पानंगयायमजिडा. प्रज्ञापानमिमाधर्मध्वगुस्वनृपा. प्रज्ञापानमिमाध  
यागुधर्मध्वगुस्वनृपागुयाडावानगु नस्याः प्रज्ञापानमिमायाः ४ उगुप्रज्ञापानमि  
माया सर्वाः पानमिमाः पविप्रनिमागुवकि ॥ वावनंसकलपानमिमायविप्र  
हयगु ॥ अधिमाकाशमिदंमलुलं अधिमागुस्त्वपिनिर्गुलीमलुलप्रमान



उक्तं च हं वक्षः हं वक्षः ननु सधया नया इ ॥ मनामलुलमिच्छकं मनामलुलध  
यागु मिलनालुलमूच्यनं मिलयज्ञयावांगु नथगनयंचनजांसि पंचव  
इतथागनयायमाननं वर्तु रुदकमसदा वर्तु रुदसियकगुक्रमर्थं नादिकाका  
वास्तुनं आकाठास्तुनं अक्षायाध्वानसियकगुमक्षास्यमूद्रनं ॐ ति अक्षा  
स्यथामूद्रासियकगु न्यायाह थूलिन्यायमगाकनमर्थः ॥ नान्यमलुलं अधिमा  
क्राहनादिनामिति अधिमागुसत्त्वपिनिर्मातुरुनसत्त्वकिनिर्मातुः भवनामलुलम  
षू ॐ ति मायाजाल ननु उक्तं थूलिमायाजाल ननु सधया नया इ ॥ ॥



दानं चिरु ॥ धनं दानधयागु चिरु ॥ इग ॥ गम मयद्रि यधन ॥ धनं ॥ गम मयध  
यागु यं च ॥ ॐ ॥ धि धन नायायगु ॥ अमूना च यान रु दं च नि ॥ अमूना च धयागु  
महायान या रु दं सिय कं ॥ काय मलु ल मलिर्नं काय मलु ल धयागु ॥ थडा  
गुठा वी च या मलु ल धना डा ॥ मलि च स मर्नं निर्या म्या मि यन म ॥ धन मा न ॥ दा  
हल पागु अर्थ ॥ ॥ ॐ ॥ नि मा या जाल न रु धन थू लि मा या जाल न रु स  
पिका सी न यागु मलु ल गम थदी व्यनी ना म समा का मलु ल गम थया टी व्य  
निया व्या र्थान समा फ ॥ ॥ लिखितं यं नं ज न त्र न समा फ नि ॥ ० ॥



[illegible]



कामादिनञ्जनलाकयानसूखवितागु ननञ्नाधानमनसि उगुञ्नाधि  
नगुमनस कामउत्पन्नकामउत्पत्तिरुल प्रवृत्तिरुगुः धूगु कामयागु  
प्रवृत्तिरुगुधाय प्रवृत्तिनाम प्रवृत्तिधयागु जन्मजनामृत्तु जन्मरुयगु  
धरुयगु मृत्तु रुयगु नस्पह उः धस्वनायागु ० दू प्रवृत्तिरुगुधाय ॥ नसर्व  
रुगुप्ररुवाः धसकल्पंरुगुनंउत्पत्तिरुल प्रवृत्तिनिमिरुगावायूनत्यन्नः  
प्रवृत्तिधयागुनिमीरुनंवायूउत्पत्तिरुल ॥ वायूरुगुगाग्निः वायूयाह उ  
नंअग्निउत्पत्तिरुल नद्वुगुगाजले अग्नियाह उनंलंख उत्पत्तिरुल ॥ पृथ्वी



हनुनाजलं लखया हनुनं यथी उत्पत्तिकुशलं. समन्तहनुयथी समन्तहं<sup>या</sup>  
हुनं यथी उत्पत्तिकुशलं. स्वर्गहनुः समन्तः स्वर्गया हनुनं समन्तुत्पत्तिकुशलं ॥  
दिवहनुः समन्तः दिवया हनुनं समन्तदत्तं अमृतं नवदंवाः अमृतया हनु  
नंदं वना उत्पत्तिकुशलं. मृत्तुहनुः अमृतं मृत्तुया हनुः अमृतं जन्महनुश्च मृ  
त्तुजन्मया हनुः मृत्तुशयगु. मृत्तुवज्जन्महनु मृत्तु. संसाधवज्जन्मया गु.  
हिनुहिलाता जन्म. जन्मा मृत्तुशयगु नवां हनुस्तथा गतः ॥ थगुहनुयान.  
तथा गतधाय ॥ यथा यनप्रकाशं रक्तथा गत. रगुप्रकाशं जन्मशयाताता



ल॥ सुखान्नप्रकाशसुखान्नः उगुप्रकाशसुखान्नः सुखा  
गन्धाय॥ आकाशमयवत् आकाशसमयावताम् ॥ नष्टोप्रवृत्तिरुक्त  
वानांधर्मात् ॥ थगुप्रवृत्तिरुक्तं नृत्यतिरुक्तं धर्मयाम संसाविकानां  
निनाधः संसाविकधर्मधाय॥ निनाधधयागु संसाविकहिनु हिलावांगु  
बंधनं यत्तिवृत्त्यात्मकं बन्धयाकगु ग्वप्पसिया निवृत्त्यात्मा लिचिलाता  
यरुत्तधर्महि प्रवृत्तिनिवातानगु सधर्मयाख निधिर्नृवदगु निधि  
यर्नृह्लादयकल ॥ अविद्यादिकान् अविद्याआदिर्नृसक्ता न मिथ्या द



सि. नामनृप. षण्णयनन. सम्पत्ति. वेदन. लुक्. उपादान. लव. जगति. जवा. मत्रस  
धनं ददता काचधर्मवक्रया कथा. हं तु प्रतावान्. हं तु नं उत्पत्तिरुल्लधर्मान्नि  
नृध्व धर्मासंज्ञानयान. निवाधधाय. ॥ आर्यासंज्ञि कै. माक्रप्रायकं आ  
र्यासंगमार्गआदिनं. माक्रअनग धर्मसंम्यक् दृष्टि १ संम्यक्कल्य २ संम्यक्  
वाक् ३ संम्यक्कर्म ४ संम्यग्गजीव ५ संम्यग्वायाम ६ संम्यक्कम्मणि ७ संम्यक्  
माधि ८ ॥ ध्यानाप्रकानयाउपाधध्वन आदिनं सधर्मचराम्पहं चनथय  
थमिनिवा. सधर्मचल्लयाडा. निर्मात्रस पदलायगु. महाअमदा ४ अमम



नायकः महाप्रमदधयाः प्रभवकयानायकः रुचाऽविद्याकः ॥ १ ॥  
सिंहगवानं उवंवादि ॥ २ ॥ वकुं ॥ ३ ॥ ल ॥ ४ ॥ उवंधयथुगकथं वादिः ॥ ५ ॥  
कल ॥ ६ ॥ निउकयक थलिद्वगुयक याव ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥  
यधर्माः रुद्रुप्रवा रुद्रुस्रवां नथगन ॥ १० ॥ कवदरुवां नानिनाध उवंवा  
दिमहाप्रमद ॥ ११ ॥ यद्वाः रुद्रुस्रवां नथगन ॥ १२ ॥ नवां रुद्रुवानीसां  
सानिकानां थुगहृदयाकानां ससंसावउत्यहिरुलगुः नथगनधय नवां रुद्रु  
हवानां सांसानिकानां थुगहृदयाकानां ससंसावदत सनानयाकाननं हाग



उत्पत्तिरुलधर्माधमपिनथगगनः धर्मधयागुषडुनि संज्ञानयागं. नथगगनध  
य. वडयनः रुगवानधय. गथधालसा निवृत्तात्मकः निर्माधमविष्कक मस्य  
संवडमहावेवाचनविधिनाचिः सम्पकवडनाम. महावेवाचनवड पंजः दग्धव  
हिकानलेन प्रकृतिधर्मदः ॐ नालच्यानाडा नयागु मत्स्वपनं नरुहिकुडा  
ग. पथः स्नानात्मकान् रुथगगान्. पथः स्नानया आकानर्ध. पथः वडउत्पत्तिरु  
ल निर्मितवान् संज्ञानदयककान् दस नपिसमकुरुडादयः धनलि समकुरु  
डुआदिनं. वडमाधि. नत्तयाधि. पथमाधि. विध्यपाधि. पंचात्मजामानसा का



समानवयुष्यानां वाधिसत्त्वानिर्मिताः वाधिसत्त्वदयकं कान्तं ॥ ४ ॥ स्थिरायाम् ॥ न  
न ॥ यद्वा पाणिनामा वाधिसत्त्वः ॥ यन्नयद्वा पाणिनामा वाधिसत्त्वं विगुह्यमिह ॥  
पंचात्मकः सन् लोकसंसर्जनसमाधियानां वा ॥ वृंश्चादयानिर्मिताः संस्तानदय  
कया कान्तं वृंश्चा आदिनं ॥ स्थिरायाम् ॥ न ॥ संस्तानप्रवृत्तिनाम् ॥ यन्नंति संस्तान  
प्रवृत्तिरुल्लग्नस्मारुथगतवह ॥ ५ ॥ यन्नंति संस्तानप्रवृत्तिनाम् ॥ ५ ॥ ॥ ॥  
यधर्माहं तु प्रवृत्तिरुल्लग्नस्मारुथगतः ॥ ५ ॥ यधर्माहं तु प्रवृत्तिरुल्लग्नस्मारुथगतः ॥ ५ ॥  
॥ यद्वा ॥ यः धर्माः ॥ ॥ हकनं शुद्धमध्यागु अष्टकानप्रवृत्तिनाम् अष्टकानप्रवृत्तिनाम्



षयानाडा हिंसा लागा या ४ पाया ४ हिंसा लागा आदि नं पाय न पिह उप्र हवा ४ ॥  
थ स क ल्पं हु नं उत्प लि हल का ध प्र ह वा हिंसा काय के वि वि धं क र्म ० ० ० आदि नं  
हिंसा या य गु. स नी न र्दी या ना या य ३ वा क्ष नि हिंसा १ अ द रु दान २ काम मि थ्वा वान ३  
म ना सि ० ० द्वा वा वि क पा य ४ धे ० ० न्य १ वि द्या ट मू ला २ का ध मू ला ३ म ना व वि द्या टि नी  
मि थ्वा दृ द्दि ना सि क ला व ३ ० ० ० आ द या १ ध र्मा ४ थू लि आ दि नं. अ ध र्म ध या गु ह  
उ स क्त्वा ४ हु या का न द स उत्प लि हल ॥ क षां हु रु क्त्वा ग न ४ थू गु हु या नं त थ्वा  
ग म ध्वा य. त थ्वा प र्व ष का न न वा ग न ४ थ्वा क्रा पा या गु प ला व नं. त थ्वा ग न उत्प लि ह



लक्ष्मणाधर्माभिनिनाधःवन्धनं. थूगुधर्मवन्धयास्यंदष्टाकृष्णलनिवन्धनंदष्ट  
कृष्णलआदिनंयायनिवन्धयानाडा. अवदन्महाधमदः महाधमदः. भवसिंहलग  
वानंअवदन्आह्लादयकल॥ यस्तथागतः. स्तथागाक्रमदआगतः॥ तथागतधाय  
तथागाधयागक्रमनं. विश्वाकर्म. तथागानाम. शून्यगारुनं. तथा. तथागा. नामशून्यता  
ज्ञानविद्यानयानाडा. नंविचार्यलोकिकलाकारुनंज्ञानमवाप्य. लोकिकलाकारु  
न. ध्वनिगाज्ञानयाविस्त्रावदनाडा. यात्रमितादि. दानयात्रमिताआदिनं. दष्टायात्रमि  
गापूर्वयानाडा. क्रमगावाधिमालत्पगतः यथाक्रमर्थवाधिज्ञानलानाडा. निर्माद्यस



माकलाकम् ॐ निगधगनः धूलिगधगनधाय ॥ ॐ निरुनीयायकः ॥ ३ ॥

यधर्माहं यथारुवाहं युक्ताहं थगनः ॥ कवदरुवांथानिवाधुवंवादिमहाथ  
महाः ॥ ॥ यवलिनिवृत्त्यान्वकृत्वाटिगं ॥ यधर्माहं थगनः ॥ यवलिनिवृत्त्यान्वकृत्वाटिगं ॥

महा४ ॥ ॥ प्रवृत्ति निवृत्त्यात्मकत्वादियं यथार्थागमः ॥ प्रवृत्ति ध्यागु. संसावि  
कधर्म. निवृत्ति ध्यागु. निर्मालिकधर्म. ध्व. यथार्थागमः सध्यागु. लोकि  
कलाकारुण्यल्लोकि कसं. लाकारुण्यसं. मंगलामंगलकार्यम् मंगलकार्यसं  
ममंगलकार्यसं. सर्वथाजनीया सकलकार्यसंचललथगु. प्रवृत्ति निवृत्ति  
धर्मरुलप्रदत्तागु. प्रवृत्तियां. निवृत्तियां. ध्वनिगायां. धर्मरुललाक ॥ प्रवृत्ति नि



वृत्तिहंउरुगत्वाच्च प्रवृत्तियां. निवृत्तियां. थ. निर्मायां असंख्यहंउइ ॥ अथ च न चारव्या  
नं थनलिथ. अष्टसाहस्रिका आदि. पंचविंशति साहस्रिकायां. लकारगवति यख  
लुयां विस्तनमयान ठाकामि विस्तानकूंमनया. य चारव्यानं अष्टसाहस्रिका खलुपि  
पंचविंशत्यादि. लकारगवति खलुपि गुग्वारव्यान या विस्तान. ठान्पमाज्ञानया  
ख अष्टसाहस्रिकसं. पंचविंशति साहस्रिका आदिनं. त्रकारगवती यख लुसं वि  
स्तानइ. नस्या प्रवृत्ति निवृत्तिश्चैव व्याख्यातत्वात् ॥ थ गु प्रवृत्ति निवृत्ति व्याख्यात  
या विस्तानख सकृफयेव व्याख्यानं संक्रफमाशुक्ता ॥ वृत्तिवतुर्थः पङ्कः ॥ ४ ॥



यधर्माहउप्रवाहउक्तवांगमगन॥ अदरुवांयानिनाधुवंवादिमहा

अमदा॥

॥ अधर्मधयागु. संसात्रअविद्यानंतुत्यहिरुतागु. मइगुवमुकद  
यकगु. कल्पना. मायानं. संस्कात्रदग. थूगुप्रकावर्ष. द्वादशाकात्रधर्मचक्रयाकथ  
त्रकाहगवनीआदिगुंथसद्भास्यंगतागु. प्रवृत्ति. निवृत्ति. अत्रिमायाकथ. उरुवन  
महाविहानसुधीगाकसिंहलगवानं. कंगुख. दनाधक. शिष्यावावचनन्यना  
उ. मेथिलदहायायलुग. आर्यानिन्दवाप्रदा. प्रसन्नहयाउ. थउसफठान  
॥०० शिष्यानंलिगकाउ. उरुवनमहाविहानसुठानाउ. शिवल्लगवदा३



पायदधाना ४ पुंश्चान्मादना ५ वन्दनानमस्कान ७ वाधिविरात्यलि ८ धनसफवि  
धनरुनयुजायाना ३ प्रवश्चवर्तमान. धनरुगवानेप्रवश्चाविया ३. आर्या नन्दआ  
दिने १०० क्रयसलमृमिष्यागलिक्रयात् ॥ ॐ निर्यत्रम ४ पक्र ४ ॥ ५ ॥ यधर्महृदुप्ररु  
गहृउरुषांरुथगम ४ ॥ श्रवदरुषांयानिनाधुववादिमहाधमव ४ ॥ ॐ निपूर्वादि  
वसिंहनाकं थूलिकायायागुवायू. भावसिंहरुगवानयाआह ॥ श्रवदरुषांयानि  
नाधुववादिमहाधमव ४ ॥ ॐ निउरुनाईमिष्यानामक्रविमि थूलिलिपायागुवायू  
मिष्यलाकयाववन ॥ आर्यावृत्तम् अथधर्मागम आर्यावृन्दधयाग ॥ ५ ॥ ॐ नि ॥



श्रुत्यै निरञ्जनैरमै प्रभुः ॥ २३ सोमहासुहवञ्जीथथिहमहासुखहेहृक  
निरञ्जनानिराकारश्रुत्यै श्रीहेहृक ॥ योभाइमनभावतई ॥ गुगुभाहृपिमनेज  
श्रुत्यै मायासं होवु २ ॥ सियकहृ श्रीहेहृक ॥ अहृहृमन्तुविवर्तय ॥  
श्रुत्यै वज्रदेवियातभावनालिगनयानाविज्यात ॥ अकारादिककारादि  
भावहृचियं स हावडां नोनासि ऊई जांव ॥ मन्त्रे तोता चो रणः ॥  
दुधासाभावभागाति संभावननमा मिडु ई जावु ॥ नोसां विन्दुं न चित्त २  
नं डत्तव नं ड निपा रात हि ॥ जमै मने मद्यका चो हृ ॥ मुर्ति मडु आत्मा मडु



रुद्रस्तोत्रमहासुहृत्पथिहस्तमहासुखवज्रश्रीहेरुक॥ नोभेदचिन्त  
नापलायमडुचितंमडु॥ जिमपरिविन्दुसंहावडा॥ निर्मललखविन्दुमाव  
तिमिमावईमनभावतइ॥ मनयाप्रभावस्वयवलेख्ययावौ॥ शुच्यनिर्जनपर  
प्रभु॥ श्रीहेरुकतधरंविना॥ नोतइपुन्यतपाद॥ नोमिपुन्यरूपिचर्ताक्रमले  
जिमजलमाज्यचन्द्रसहि॥ निर्मलजलेचोसचन्द्रमाथेडज्वल॥ नोस्व  
हमिह॥ निर्मलधायमज्जुहुसंभिलेमज्जु॥ तिमिसोमण्डलचक्रडा  
वन्दुमण्डलचक्रयालुथ॥ तनयनसहावेस्वह॥ ज्ञानयानिस्वयवलेस्वह  
निमल



पुरं श्रराविधिमाह॥ आदौ देवतावत्तयुजा॥ **ए**वौ साधनविधिः हार्यामारवलिवियसमसानवलिव  
यमारपि सक्कल्ययाहाओनभाष्य॥ धनलिआसवो॥ धनईकायकातायआथ्यवत्तुमुखंमत्तनजा  
पयायकोधनैव्यरवरीविनेहोले॥ वलिनयाशान्तमजुपिथ्यचतुर्मुखमत्तनैव्यानाहोयेमुत्तादिमार  
गारापि सक्कल्यसमुशान्तथैकओनभाष्ये॥ ओं वत्तरक्षमहारक्षसर्वहुं फुदस्वाहा॥ धमत्तैवजजोनाघैठ  
जोनाथत्तरक्षयाय॥ धनलिसामाग्रीदक्तहलव्राधुलिमाधकाध्यकनायायववाहिकमेपिस्त्रुवो  
नेमते॥ हार्यागुरुसाधना॥ दकोसुन्यधकाभाष्यद्वैरमात्तडकिमुंकारपत्यतिजुलमुंकारधमैपुरस  
रायाथाकुतीगारदत्तमरागुलफुद्ममुगुंधकाभाष्य॥ धयाइनेविनेपुजायागुसामाग्रीदक्तपुराजुया  
चोन॥ ओं वत्ताधिष्ठानहुं॥ धमत्तसक्कतीभधिष्ठानयाय॥ धयनेगुलिमारडलिमरागुलदयक्यधमरागु  
लदथुसुश्रुवर्तापासिहासनधयादिओनेपमासनधयादेवनेचदासनधयादेवनेपुरसरायाय



सदेव गुरुस्वरुडसयो लयात सकल गुरुपिस चाडला चौ गुरु दधुयु अओने शाक्य सिंह स्वरुप च। तुवले  
भावयाना विज्यास्तथागता गुरुगालिड दोगव लपुसरा या नाह ओह धर्म प्रज्ञा पारमिता हासु। गुरुपाख वसे  
अष्टवो घिसत्वमनु श्रीवज्रपारी ओचु शान्त मुर्ति खगमलोक्य स्वरक्षिति गर्भ तुयु मैतिवो घिसत्व ह्य  
उ गगरा गज स्नारु समतम उ पित सर्वो रोवरा वी की मिज वस धक क दे ओं ड स्वरा चोना अगनि कन  
निस विरजोगी निमहा काल भौ वध प्य हस्व ड स्वरा चोना लपि द्धरव्य ना चोना अति ताना ग  
तत्यादि नमस्कार चतुर्विध भावना या या प्रार्थनाः जिमनुष्य जन्म ज्ञया जि धर्म ह्द २ मड आ जि  
सख्या ज्ञाप या यः धन पुया नागु लि धर्मा वौ दानु कि जापरिवार आदि चय च्या लख प्राप्ति  
स्वप्ति ह्द सोरु ना चौ सिक ल्य ड धार नु यमा धका माध्या धा नु ग ल गुहिर दे व या पुर चरा  
याना ड स दे व ता डत्य निजुल व ल र स्या त गु गुरु माल ड गु जो ना ख प्र ति प्र मि ति ड धार या त

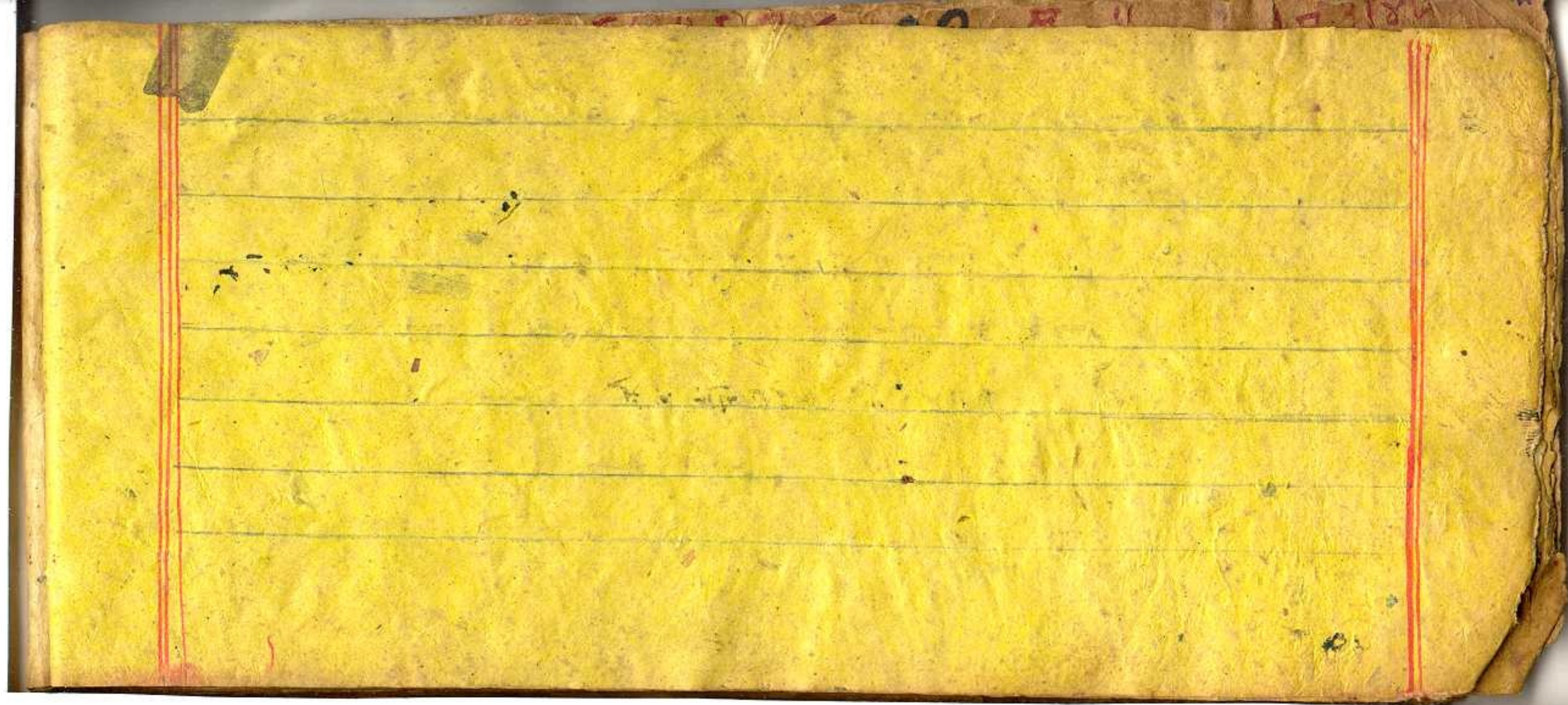


भाष्य ॥ ध्यातुं तत्रासाधुराचार्यानां ध्यातुं आसाधुराजुषु ॥ सर्वलोकानां सौख्यं भवन्तु ॥ धर्माव लोके  
 तापापुरस्सारायानी ओं लोदेवताभाष्य ॥ सर्वसारे सत्त्वप्राप्तिस्तकल्य ओं लोदेवता द्यागुप्तायानभाष्य  
 शिरस्त्रियाधधेयाय ॥ धनडाकडा निमैव माहाकाल गुरुया ओं ७ चौं हयाकेरीनजुल श्रवनेचौं  
 बुद्धयाकेरिगाजुल बुद्धधर्मयाकेरिगाजुल धर्मसंघयाकेरिगाजुल संघ गुरुयाकेरिगाजुल गुरु मुह  
 गुरुयाकेरिगाजुल गुरुया ओं कपाल्यभाकथुं नुगस्वगआखलुं स्व गुरुस्मीया हावयाधकेरिगाजुल भाष्य  
 ध्याभावगथ्यधाता गुरुया तिल्यगुगुगु ओं कार ओं द्यावो नमो

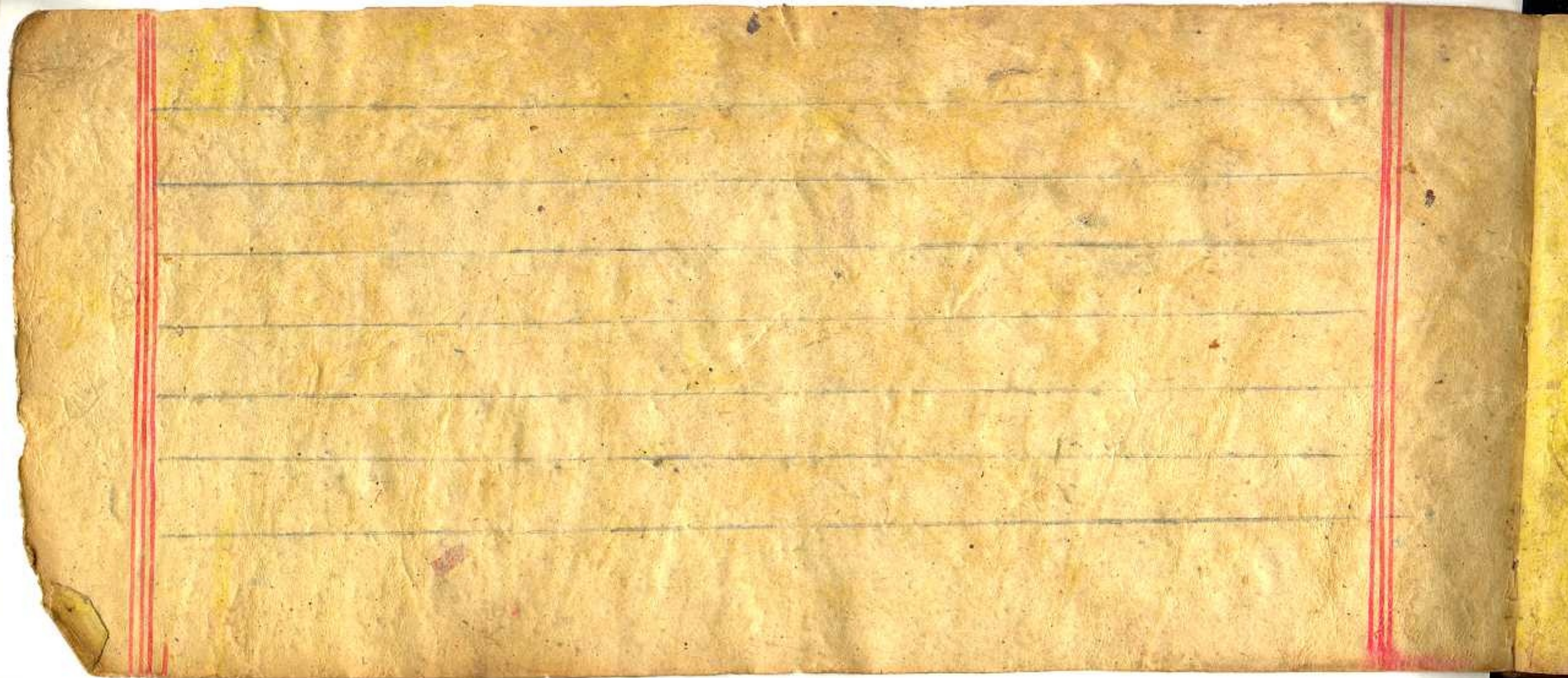
५४५००

अ  
 १  
 १॥  
 ३॥  
 २२५  
 २५०





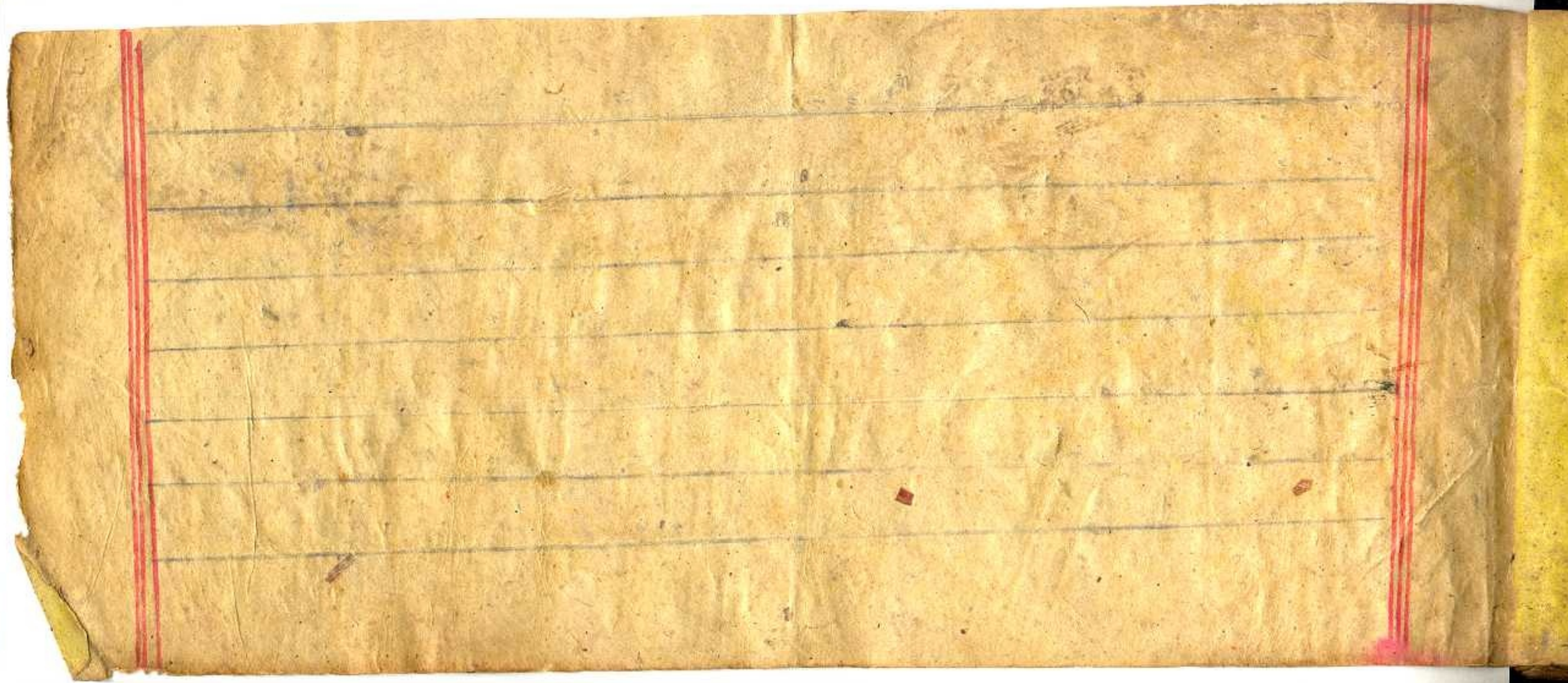


















ਮੁਕਤੀ

ਮੁਕਤੀ ਦੇ ਲਈ ਸਾਰੇ ਸਮੇਂ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਨੀ  
ਮੁਕਤੀ ਦੇ ਲਈ ਸਾਰੇ ਸਮੇਂ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਨੀ  
ਮੁਕਤੀ ਦੇ ਲਈ ਸਾਰੇ ਸਮੇਂ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਨੀ



[illegible]



Handwritten text in a script, likely Indic, at the top of the page.

003

Handwritten text in a script, likely Indic, in the upper middle section.

Handwritten text in a script, likely Indic, in the middle section.

Handwritten text in a script, likely Indic, in the lower middle section.

Handwritten text in a script, likely Indic, in the lower middle section.

22

Handwritten text in a script, likely Indic, at the bottom of the page.

Handwritten text in a script, likely Indic, on the right side of the page.

Handwritten text in a script, likely Indic, at the bottom right of the page.